7/11/22 पत्रावली पेश हुई। वकील वादी को आवाज लगाई गई। बार-बार आवाज लगाने के बावजूद भी वकील वादी न्यायालय में हाजिर नहीं होने पर वाद को अदम हाजरी अदम पैरवी मे खारिज किया जाता है। पत्रावली फैसल शुमार होकर बाद तकमील होकर दाखिल दफ्तर हो।

Rem.